

ERTONGSUZHI

儿童素质教育读本 jiaoyuduben

青少版

唐诗三百首

Qingshaoban

教育部《全日制义务教育语文新课程标准》指定书目

课外阅读精品屋

陶冶你的性情，激发你的灵感，

增长你的知识，使你终生受益……

唐诗三百首，代代相传。



Y
延边大学出版社
YANBIANDAXUECHUBANSHE

儿童素质教育读本

TANGSHISANBAISHOU

唐诗三百首

编选：李莎莎 插图：华文

熟读唐诗三百首，不会作诗也会吟。



延边大学出版社

儿童素质教育读本

——唐诗三百首

出版发行:延边大学出版社

责任编辑:金春玉

责任校对:李莎莎

装帧设计:华育文化设计制作

编选:李莎莎

社址:吉林省延吉市公园路 105 号

邮编:133002

网址:<http://www.eabook.com>(网络书局)

传真:0433-2732434

印刷:武汉市佳汇印务有限公司

经销:全国各地新华书店

开本:880×1230 印张:64 印张

字数:1280 千字 印数:1-10000 册

版次:2006 年 1 月第 2 版

印次:2006 年 1 月第 1 次印刷

ISBN7-5634-1449-5/G · 232

定价:96.00(全八册)

版权所有 翻印必究 发现质量问题 请与厂家调换



前言

中国是个历史悠久的文明古国，是诗的国度。唐诗是中国五七言古今体诗的高峰。它是我们华夏民族的瑰宝，是炎黄子孙的骄傲，千百年来一直为人们津津乐道，广为传诵，而且长盛不衰。

唐诗内容广泛，有的咏山川田园之美，有的写边塞将士的英勇气概，有的记述民间疾苦和人民愿望，有的抒发个人志向和奋发精神，有的表达人与人之间美好的情感……一首首诗作，一面面镜子，反映社会生活，映照人们心灵。不仅如此，优秀诗作的语言还讲求音韵和谐，既有明白晓畅的，又有含蓄深沉的，言简意赅，富有情味。熟读唐诗是提高我们自身素质乃至整个民族文化素质的重要内容。作为文化工作者，能够为祖国优秀文化遗产的薪火相传尽绵薄之力是我们无上的荣耀，也是我们不可推卸的责任。参照中小学语文课本和教育部颁布的古诗词背诵推荐篇目，同时兼顾到少年儿童的阅读兴趣，我们精心编选了这本全新的《唐诗三百首》奉献给广大青少年朋友。

本书辑录时以作者为经线，以时间为纬线联缀而成，脉络清晰，便于阅读时查找。所选作品均为世代传诵的名

作，富有韵律，琅琅上口，为人们喜闻乐道。大多数诗篇都配有生动的插图，以帮助同学们更好地理解诗的内容。可谓图文并茂，形神兼备。相信同学们在阅读时能感到全身心的轻松和愉悦。若能如此，那便是我们莫大的欣慰了。

当然，虽然我们怀着十二分的热情与虔诚之心去完成这本书，然而毕竟“人无完人，金无足赤”，其中失误与疏漏之处在所难免，还望读者朋友见谅。同时也真诚欢迎各位同学及同仁提出宝贵意见，以便我们改进工作。在此深表感谢。

编者



【目 录】

| | | |
|-----|-----------|----|
| 虞世南 | 咏萤火 | 1 |
| | 蝉 | 2 |
| 王 绩 | 野望 | 3 |
| 骆宾王 | 咏蝉 | 4 |
| | 咏鹅 | 6 |
| | 易水送别 | 7 |
| 杜审言 | 和晋陵陆丞早春游望 | 8 |
| | 送崔融 | 9 |
| 王 勃 | 送杜少府之任蜀州 | 10 |
| | 山中 | 11 |
| 杨 炯 | 从军行 | 12 |
| 宋之问 | 渡汉江 | 13 |
| 沈佺期 | 独不见 | 14 |
| 陈子昂 | 登幽州台歌 | 15 |
| | 赠乔侍御 | 16 |
| | 春夜别友人 | 17 |
| 贺知章 | 咏柳 | 18 |
| | 回乡偶书(其一) | 19 |
| | 回乡偶书(其二) | 20 |
| 张若虚 | 春江花月夜 | 21 |
| 张 说 | 送梁六自洞庭山 | 23 |
| 张敬忠 | 边词 | 24 |
| 张九龄 | 望月怀远 | 25 |
| | 照镜见白发 | 26 |
| 王之涣 | 登鹳雀楼 | 27 |
| | 凉州词 | 28 |

| | | |
|-----|-----------|----|
| 孟浩然 | 夜归鹿门歌 | 29 |
| | 春晓 | 31 |
| | 过故人庄 | 32 |
| | 宿建德江 | 33 |
| | 望洞庭湖赠张丞相 | 34 |
| | 送朱大入秦 | 35 |
| | 渡浙江问舟中人 | 36 |
| 李 颀 | 古从军行 | 37 |
| 綦毋潜 | 春泛若耶溪 | 39 |
| 王昌龄 | 出塞 | 41 |
| | 从军行(其二) | 42 |
| | 塞上曲 | 43 |
| | 芙蓉楼送辛渐 | 44 |
| | 从军行(其四) | 45 |
| | 塞下曲 | 46 |
| | 卖花翁 | 47 |
| | 采莲曲 | 48 |
| | 从军行(其五) | 49 |
| | 送柴侍御 | 50 |
| 王 维 | 送元二使安西 | 51 |
| | 竹里馆 | 52 |
| | 终南山 | 53 |
| | 山居秋暝 | 54 |
| | 山中送别 | 55 |
| | 鹿柴 | 56 |
| | 相思 | 57 |
| | 杂诗 | 58 |
| | 九月九日忆山东兄弟 | 59 |
| | 鸟鸣涧 | 60 |
| | 莲花坞 | 61 |



| | | |
|-----|---------------|----|
| | 少年行(其一) | 62 |
| | 山中 | 63 |
| | 使至塞上 | 64 |
| | 观猎 | 65 |
| 李 白 | 秋浦歌(其十五) | 66 |
| | 客中作 | 67 |
| | 静夜思 | 68 |
| | 赠汪伦 | 69 |
| | 早发白帝城 | 70 |
| | 听蜀僧浚弹琴 | 71 |
| | 峨眉山月歌 | 72 |
| | 望庐山瀑布 | 73 |
| | 独坐敬亭山 | 74 |
| | 子夜吴歌 | 75 |
| | 长干行 | 76 |
| | 送友人 | 78 |
| | 秋登宣城谢朓北楼 | 79 |
| | 宣州谢朓楼饯别校书叔云 | 80 |
| | 月下独酌 | 81 |
| | 金陵酒肆留别 | 82 |
| | 陪侍郎叔游洞庭醉后 | 83 |
| | 夜宿山寺 | 84 |
| | 望天门山 | 85 |
| | 黄鹤楼送孟浩然之广陵 | 86 |
| | 闻王昌龄左迁龙标,遥有此寄 | 87 |
| | 劳劳亭 | 88 |
| | 春夜洛城闻笛 | 89 |
| | 清平调(其一) | 90 |
| | 长相思 | 91 |
| | 行路难 | 93 |

| | | |
|-----|------------|-----|
| | 将进酒 | 95 |
| 王湾 | 次北固山下 | 97 |
| 崔颢 | 黄鹤楼 | 98 |
| 王翰 | 凉州词 | 99 |
| 张旭 | 山中留客 | 100 |
| 高适 | 别董大 | 101 |
| | 除夜作 | 102 |
| | 夜别韦司士 | 103 |
| 储光羲 | 钓鱼湾 | 104 |
| 刘长卿 | 逢雪宿芙蓉山主人 | 105 |
| | 送灵澈上人 | 106 |
| 杜甫 | 春夜喜雨 | 107 |
| | 绝句四首(其三) | 108 |
| | 漫兴 | 109 |
| | 旅夜书怀 | 110 |
| | 绝句四首(其一) | 111 |
| | 月夜 | 112 |
| | 登楼 | 113 |
| | 登岳阳楼 | 114 |
| | 梦李白 | 115 |
| | 登高 | 116 |
| | 八阵图 | 117 |
| | 江南逢李龟年 | 118 |
| | 水槛遣心二首(其一) | 119 |
| | 月夜忆舍弟 | 120 |
| | 望岳 | 121 |
| | 绝句四首(其二) | 122 |
| | 江畔独步寻花(其五) | 123 |
| | 兵车行 | 124 |
| | 丽人行 | 126 |



| | | |
|-----|------------|-----|
| | 蜀相 | 128 |
| | 春望 | 129 |
| | 闻官军收河南河北 | 130 |
| | 前出塞(其六) | 131 |
| | 江村 | 132 |
| | 赠花卿 | 133 |
| | 江畔独步寻花(其六) | 134 |
| 李 华 | 春行即兴 | 135 |
| 岑 参 | 行军九日思长安故园 | 136 |
| | 送人赴安西 | 137 |
| | 碛中作 | 138 |
| | 山房春事 | 139 |
| | 逢入京使 | 140 |
| 刘方平 | 月夜 | 141 |
| 张 继 | 枫桥夜泊 | 142 |
| 缪氏子 | 赋新月 | 143 |
| 钱 起 | 归雁 | 144 |
| 贾 至 | 初至巴陵 | 145 |
| 韩 翃 | 寒食 | 146 |
| | 宿石邑山中 | 147 |
| 司空曙 | 江村即事 | 148 |
| 李 端 | 拜新月 | 149 |
| 严 维 | 丹阳送韦参军 | 150 |
| 戴叔伦 | 三闾庙 | 151 |
| | 兰溪棹歌 | 152 |
| 韦应物 | 滁州西涧 | 153 |
| | 寄李儋元锡 | 154 |
| | 秋夜寄邱二十二员外 | 155 |
| | 咏露珠 | 156 |
| | 寒食寄京师诸弟 | 157 |

| | | |
|-----|-----------------|-----|
| 卢纶 | 塞下曲(二) | 158 |
| | 塞下曲(三) | 159 |
| 李益 | 夜上受降城闻笛 | 160 |
| 于鹄 | 巴女谣 | 161 |
| 孟郊 | 游子吟 | 162 |
| | 登科后 | 163 |
| 李约 | 观祈雨 | 164 |
| 杨巨源 | 城东早春 | 165 |
| | 和练秀才杨柳 | 166 |
| 武元衡 | 春兴 | 167 |
| 崔护 | 题都城南庄 | 168 |
| 权德舆 | 岭上逢久别者又别 | 169 |
| 常建 | 题破山寺后禅院 | 170 |
| 张籍 | 成都曲 | 171 |
| | 秋思 | 172 |
| 王建 | 新嫁娘词 | 173 |
| | 雨过山村 | 174 |
| | 十五夜望月寄杜郎中 | 175 |
| 薛涛 | 陈情上韦令公 | 176 |
| 韩愈 | 早春呈水部张十八员外 | 177 |
| | 晚春 | 178 |
| | 春雪 | 179 |
| 吕温 | 贞元十四年早甚 见权门移芍药花 | 180 |
| 刘禹锡 | 元和十年自朗州召至京， | |
| | 戏赠看花诸君子 | 181 |
| | 再游玄都观 | 182 |
| | 乌衣巷 | 183 |
| | 秋词 | 184 |
| | 望洞庭 | 185 |
| | 浪淘沙 | 186 |



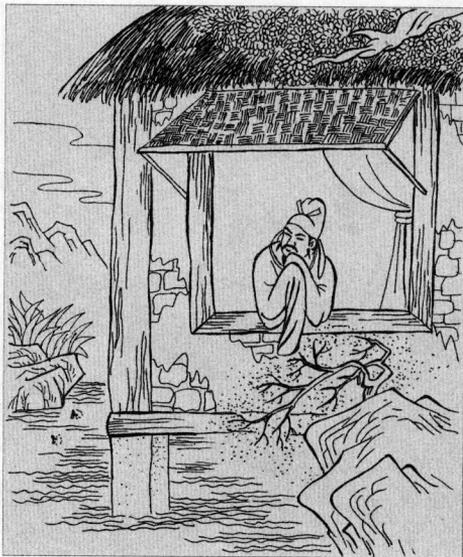
| | | |
|------------|---------------|-----|
| | 竹枝词 | 187 |
| | 秋风引 | 188 |
| 白居易 | 赋得古原草送别 | 189 |
| | 钱塘湖春行 | 190 |
| | 大林寺桃花 | 191 |
| | 暮江吟 | 192 |
| | 夜雪 | 193 |
| | 问刘十九 | 194 |
| | 池上 | 195 |
| | 卖炭翁 | 196 |
| | 惜牡丹花 | 197 |
| | 遗爱寺 | 198 |
| 张志和 | 渔歌子 | 199 |
| 李 绅 | 悯农二首(其一) | 200 |
| 柳宗元 | 江雪 | 201 |
| | 与浩初上人同看山寄京华亲故 | 202 |
| 李 涉 | 井栏砂宿遇夜客 | 203 |
| 施肩吾 | 瀑布 | 204 |
| 元 稹 | 遣悲怀(其二) | 205 |
| | 菊花 | 206 |
| | 闻乐天授江州司马 | 207 |
| | 离思 | 208 |
| 贾 岛 | 题诗后 | 209 |
| | 寻隐者不遇 | 210 |
| | 剑客 | 211 |
| 朱庆馀 | 宫词 | 212 |
| | 闺意献张水部 | 213 |
| 李 贺 | 雁门太守行 | 214 |
| | 马诗(其五) | 215 |
| | 南园十三首(其五) | 216 |

| | | |
|-----|-----------|-----|
| | 南园十三首(其六) | 217 |
| 杜牧 | 清明 | 218 |
| | 江南春 | 219 |
| | 泊秦淮 | 220 |
| | 长安秋望 | 221 |
| | 寄扬州韩绰判官 | 222 |
| | 山行 | 223 |
| | 秋夕 | 224 |
| | 题乌江亭 | 225 |
| | 赤壁 | 226 |
| | 过华清宫绝句 | 227 |
| 温庭筠 | 商山早行 | 228 |
| 陈陶 | 陇西行 | 229 |
| 李商隐 | 锦瑟 | 230 |
| | 无题二首(其一) | 231 |
| | 无题 | 232 |
| | 贾生 | 233 |
| | 登乐游原 | 234 |
| | 夜雨寄北 | 235 |
| 李群玉 | 书院二小松 | 236 |
| 高骈 | 山亭夏日 | 237 |
| 罗隐 | 蜂 | 238 |
| 皮日休 | 汴河怀古(其二) | 239 |
| 韦庄 | 台城 | 240 |
| 黄巢 | 菊花 | 241 |
| 高蟾 | 上高侍郎 | 242 |
| 章碣 | 焚书坑 | 243 |
| 韩偓 | 晓日 | 244 |

咏萤火

虞世南^①

玊珠流光小^②，
飘摇弱翅轻^③。
恐畏无人识^④，
独自暗中明。



【注释】①虞世南，字伯施，越州余姚(在今浙江省)人，是初唐时期的书法家、诗人。②玊珠：明亮、鲜明的样子。③飘摇：在空中随风飞动的样子。弱翅：又小又弱的翅膀。④恐畏：恐怕。识：认识，知道。

【译文】萤火虫飞舞，闪烁着细小的亮光，它随风飘来飘去，鼓动着又弱又轻的翅膀。它害怕由于自身过于渺小没有人能了解自己，总是独自在黑暗中奉献出点点亮光。

【赏析】这首诗不只在写萤火，而且刻画了萤火虫的生动形象。诗的前两句写萤火虫又小又弱，诗的后两句意思一转，说萤火虫虽小虽弱，但是不甘心默默无闻，偏要在暗夜发光以显示自己的存在。

蝉

虞世南

垂缕饮清露^①，
流响出疏桐^②。
居高声自远^③，
非是藉秋风^④。

【注释】 ①垂缕：古代帽带系好后，剩余的下垂部分。此处指蝉腹上的针管状嘴。清露：洁净的露水，古人认为蝉生性高洁，栖高饮露。②流响：蝉鸣传扬飞动。疏桐：枝叶稀疏的梧桐树林。③居高：在很高的地方。④藉：凭借，依靠。

【译文】 蝉垂着细长的嘴，吮吮着洁净的露水。那响亮动听的长鸣，从稀疏的梧桐林里不断传出。蝉栖息在高高的枝头，声音自然能传得很远，并不是借助了秋风的吹送。

【赏析】 这首诗的前两句，描写了蝉的高洁形象。诗的后两句，表达了诗人的思想感情：只要品格高洁，不需要任何凭借，自然能声名远扬。突出强调了一种人格的美，人格的力量。



野望

王 绩

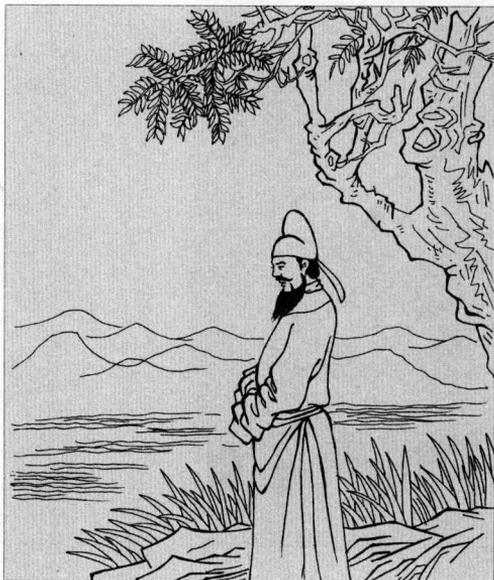
东皋薄暮望，徙倚欲何依^①。
 树树皆秋色，山山唯落晖。
 牧人驱犊返^②，猎马带禽归。
 相顾无相识，长歌怀采薇^③。

【注释】 ①徙倚：徘徊，彷徨。②犊：小牛，泛指牛。③长歌怀采薇：指追怀

古代采薇而食的隐士伯夷和叔齐。薇，蕨薇。

【译文】 傍晚时分，来到东皋张目远望，内心彷徨，无所依傍。但见棵棵树上枝叶漾着秋色；四面山上，只剩下落日的余光。放牧的人赶着牛群返回家园，猎人们骑马带着猎物回到村上。我和人们互相看看仿佛不曾相识，放歌长啸，不禁想起采薇而食的伯夷和叔齐。

【赏析】 这首诗写的是山野秋景，在闲逸的情调中，带着几分彷徨和苦闷，是王绩的代表作。诗的首尾两联抒情言事，中间两联写景。在情——景——情这一反复中，诗的意思得以深化。



咏 蝉

骆宾王

西陆蝉声唱^①，南冠客思深^②。
 不堪玄鬓影^③，来对白头吟。
 露重飞难进，风多响易沉。
 无人信高洁^④，谁为表予心？

